इब्राहीम के साथ मसीह से सम्बन्धित वाचा

उत्पत्ति 22:18 में परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ प्रतिज्ञा की कि ''पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तूने मेरी बात मानी है।'' गलतियों 3:16 में पौलुस ने इस प्रतिज्ञा को मसीह के बारे में एक भविष्यवाणी कहा: ''निदान, प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को और उसके वंश को दी गईं: वह यह नहीं कहता कि वंशों को; जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि तेरे वंश को: और वह मसीह है।''

कई लोगों ने पौलुस पर इब्रानी और यूनानी दोनों भाषाओं के इस्तेमाल में गलती करने का आरोप लगाया है (गलतियों 3:16) क्योंकि उनका मानना है कि बाइबल में इन दोनों शब्दों का इस्तेमाल बहुवचन रूप में होता है। परन्तु, यह सत्य नहीं है। ''वंश'' के लिए इब्रानी शब्द *ज़ेरा* (*zera*), और यूनानी समानार्थक शब्द *स्पर्मा* (*sperma*) एकवचन में हैं परन्तु उनका अर्थ सामूहिक हो सकता है। इस प्रकार ये शब्द एकवचन या बहुवचन किसी भी रूप में हो सकते हैं। अधिकतर मामलों में, केवल संदर्भ या शब्द का इस्तेमाल करने वाला ही तय कर सकता है कि इसका क्या अर्थ है।

पुराने नियम में इब्रानी शब्द *ज़ेरा* का इस्तेमाल आम तौर पर बहुवचन रूप में हुआ है, परन्तु कुछ पदों में *ज़ेरा* का एक मात्र सम्भावित इस्तेमाल एकवचन ही है। उदाहरण के लिए देखिए, उत्पत्ति 4:25; 15:3; 21:13; और 1 शमूएल 1:11.

ज़ेरा शब्द जिसका अनुवाद ''वंश'' या ''संतान'' हुआ है, को इन पदों में केवल एक वचन के रूप में ही लिया जा सकता है। इसी प्रकार, यूनानी शब्द *स्पर्मा* अधिकतर बहुवचन में ही है परन्तु उसे एकवचन में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। मत्ती 22:25 में ''संतान'' (*स्पर्मा*) का अर्थ एक या अधिक बच्चे समझा जाना चाहिए। मरकुस 12:20-22 को भी ऐसे ही समझा जाना चाहिए क्योंकि मरकुस 12:19 विशेष रूप से ''बिना संतान'' (एकवचन) लिखा है।

पुराने व नये दोनों नियमों में ही, ''वंश'' के लिए ये शब्द एकवचन हो सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि उनका सबसे प्रचलित अर्थ यही है; लेकिन यह तथ्य कि इनका इस्तेमाल होता है यह अर्थ देता है कि पौलुस एक वंश अर्थात यीशु की बात करते हुए गलत नहीं कह रहा था कि उत्पत्ति 22:18 में परमेश्वर केवल ''एक'' की ही बात कर रहा था।

परन्तु, परमेश्वर का आत्मा पौलुस का मार्ग प्रदर्शन कर रहा था (1 कुरिन्थियों 7:40); इसलिए आत्मा द्वारा पौलुस को ''वंश'' के इस्तेमाल में परमेश्वर की मंशा का पता चला था। परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी कि वह इब्राहीम की एक ही संतान के द्वारा संसार को आशीष देगा, सभी संतानों के द्वारा नहीं।

इब्राहीम की संतान के द्वारा पृथ्वी के सब घरानों को आशीष देने का यह समझौता परमेश्वर की बड़ी वाचाओं में एक है। इस पर केवल यहूदियों की नहीं, बल्कि अन्यजातियों की भी उम्मीद टिकी हुई है, क्योंकि इस प्रतिज्ञा में पृथ्वी के सारे घराने सम्मिलित थे। यहूदी लोग यह समझते थे कि इस कथन में केवल उन्हें ही शामिल किया गया है अर्थात जाति के रूप में उनसे ही सारी दुनिया को आशीष मिलेगी। इसके बजाय, परमेश्वर इस बात को अपने प्रिय पुत्र यीशु मसीह के लिए चाहता था, जिसके द्वारा उसने पृथ्वी के सारे घरानों को आशीष देनी थी।

इब्राहीम ने परमेश्वर की बात मानी (उत्पत्ति 22:18), और यदि हम भी वैसा ही करते हैं तो हमें भी आशीष मिलेगी। हमारे लिए अनन्त उद्धार देने वाले यीशु के द्वारा परमेश्वर के पीछे चलना आवश्यक है (इब्रानियों 5:9)। हमारे लिए ''इब्राहीम के समान विश्वास वाले'' होना आवश्यक है (रोमियों 4:16)।